14/04/2020 (ग) सम्प्रेषण के विभिन्न मॉडल (11)

सम्प्रेषण समाज की रचना का आधार है। प्रत्येक युग में मनुष्य एवं समाज सम्प्रेषण-प्रक्रिया के प्रति सजग रहा है। समाज का विकास और सम्प्रेषण का विकास-क्रम साथ-साथ विकसित हुआ। सम्प्रेषण संदेश के द्वारा मनुष्यों को आपस में जोड़ता है। सम्प्रेषण को किसी सीमा में बाँधना शायद सम्भव नहीं है फिर भी कुछ मापदण्डों को आधार बनाकर इसे संचारित किया जा सकता है। संदेश को जिन मान्यताओं, सीमाओं एवं परिवेश में संचारित किया जाता है वही सम्प्रेषण के मॉडल कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के मध्य आदर्श मूल्यों की रक्षा तथा स्थापना करने के लिए सार्वभौमिक समुदाय हेतु निश्चित सीमा में किया गया सम्प्रेषण ही सम्प्रेषण के मॉडल है। सम्प्रेषण के सिद्धान्तों को दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है–

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेशों की स्थापना हेतु प्रतिपादित सम्प्रेषण मॉडल
2. विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों के विचारों पर आधारित सम्प्रेषण मॉडल

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेशों की स्थापना हेतु प्रतिपादित सम्प्रेषण मॉडल–

(क) साम्यवादी मॉडल– यह मॉडल साम्यवाद के सिद्धान्तों पर आधारित है। 1917 में हुई क्रान्ति की सफलता के पश्चात् सोवियत संघ में इसे सबसे पहले लागू किया गया था। साम्यवाद की मूल विचारधारा है- शोषित वर्ग के लिए करुणा की भावना तथा शोषक वर्ग के प्रति कटुता की भावना का होना। यह मॉडल भी इस विचारधारा पर टिका है। इसके अन्तर्गत शोषक वर्ग के द्वारा शोषित वर्ग के शोषण के विरुद्ध आवाज को बुलन्द किया गया। मिल मालिकों आदि के द्वारा मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों को प्रमुखता से लिया गया। जनतन्त्र के लिए एक ऐसी आचार-संहिता बनाई गई जिसमें देश ही सर्वोपरि था तथा देश के निर्माण में जनतन्त्र की प्रमुख भूमिका थी।

इस मॉडल का प्रभाव बहुत व्यापक था। महान् नेता लेनिन के विचारों से रूस, चीन, क्यूबा तथा संसार के अनेक देश प्रभावित थे। यह मॉडल वैश्विक घटनाओं से जनसामान्य को दूर रखने तथा परम्परागत तरीकों से जीवन-यापन करने का समर्थक था। यह मॉडल काफी सशक्त होने के बावजूद भी विचारों

चाहती है। इस प्रकार के मॉडल को कट्टरवादी मॉडल कहा जाता है। बर्मा, थाईलैण्ड, नेपाल, भूटान, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में कट्टरवादी मॉडल को बढ़ावा मिला। इसमें समाज के रहन-सहन, उठने-बैठने, घूमने-फिरने, लिखने-पढ़ने आदि सभी क्षेत्रों में पाबन्दी लगा दी जाती है। टी. वी., रेडियो आदि पर भी महिलाओं की हिस्सेदारी पर रोक लगा दी जाती है। धीरे-धीरे यह मॉडल असफल हो जाता है तब उदारवादी मॉडल लागू कर दिया जाता है।

(च) उदारवादी मॉडल– यह सम्प्रेषण का सर्वश्रेष्ठ मॉडल है क्योंकि इसमें संसार की संभी श्रेष्ठ बातों को सम्मिलित किया गया है। यदि कोई सरकार के विरुद्ध भी अपने विचारों को प्रसारित करना चाहे तो उसे पूरी छूट होती है। इसमें सम्प्रेषण के लिए दैनिक आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों को समझने, शिक्षा के स्तर को बढ़ाने जैसे विषयों पर बल दिया जाता है।

(छ) वैदिक मॉडल– यह मॉडल विश्व का सबसे प्राचीन मॉडल माना जाता है क्योंकि यह वेदकाल से ही प्रचलित है। इसकी सम्प्रेषण-पद्धति गुरु शिष्य शिक्षा प्रणाली पर आधारित है। हमारे देश में वैदिक सम्प्रेषण में हजारों वर्षों तक केवल मौखिक सम्प्रेषण ही होता था। राजा को ईश्वर का दर्जा दिया जाता था। राजा प्रजा के सम्बन्ध बहुत मधुर थे। विशेष रूप से भारतीय संस्कृति एवं भारतीय परम्पराओं पर ही यह सम्प्रेषण टिका हुआ था। ब्रिटिश शासन के आने पर अंग्रेजों ने इन्हीं परम्पराओं पर कुठाराघात किया था। आज ब्रिटिश मॉडल की झलक भारतीय सम्प्रेषण पद्धति पर दिखाई देती है।

2. विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों के विचारों पर आधारित सम्प्रेषण मॉडल–सम्प्रेषण पर अध्ययन तो हुआ लेकिन चिन्तन कम हुआ। इसी कारण सम्प्रेषण का दार्शनिक पक्ष अभी भी पूर्ण रूप से अस्तित्व में नहीं आ सका। इस पर पश्चिम का प्रभाव तथा वर्चस्व ही अधिक है। सम्प्रेषण के सैद्धान्तिक विकास एवं अध्ययन से पूर्व का दृष्टिकोण पूर्ण रूप से उपेक्षित रहा है। इसी कारण सम्प्रेषण मॉडल को सिर्फ पश्चिमी देन के रूप में जाना जाता है। पश्चिमी विद्धानों के कुछ प्रमुख सम्प्रेषण-मॉडल निम्नलिखित हैं–

(क) अरस्तू का मॉडल– इस मॉडल को ग्रीक दार्शनिक अरस्तू ने आज से लगभग 2300 वर्ष पूर्व प्रतिपादित किया था। अरस्तू के अनुसार यदि प्रेरक तकनीक का प्रयोग किया जाए तो सन्देश द्वारा प्राप्तकर्ता की विचार प्रक्रिया को परिवर्तित किया जा सकता है। इस मॉडल के अनुसार सम्प्रेषण के लिए 1. प्रेषक

की संकीर्णता के कारण प्रसिद्ध नहीं हो पाया। 15/04/2020 (12)

(ख) चाइनीज़ मॉडल– चीन साम्यवादी देश है परन्तु इसकी सोच कुछ भिन्न है। चीन बौद्ध धर्म से प्रभावित है। अत: इस देश की सम्प्रेषण व्यवस्था में महात्मा बुद्ध के विचारों की बहुलता है। अपने से बड़ों का सम्मान करना, मानवीय गुणों को महत्त्व देना, क्रान्ति की अपेक्षा शान्ति की बात करना, देश के प्रति वफ़ादारी आदि चाइनीज मॉडल की कतिपय विशेषताएँ हैं। चीन की सम्प्रेषण पद्धति भारत के पंचशील मॉडल पर आधारित है।

(ग) ईसाइयों का मॉडल– यह मॉडल स्वतन्त्र विचारों एवं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर आधारित है। इसमें मनुष्य की संवेदना, उसके कोमल हृदय, सेवा भाव एवं ईश्वर के प्रति समर्पणता पर जोर दिया गया है। यूरोप के अधिकांश देशों की सम्प्रेषण-व्यवस्था इसी मॉडल पर आधारित है क्योंकि ब्रिटेन ने विश्व के अधिकांश देशों पर शासन किया है और यह मॉडल ब्रिटेन की सम्प्रेषण प्रक्रिया पर आधारित है। यह मॉडल बहुत लोकप्रिय है क्योंकि इसमें अवरोधों के लिए कोई स्थान नहीं है। कहीं भी कोई भी बात जो मानव हित में है, उसे आम व्यक्ति तक तुरन्त पहुँचा दिया जाता है। भारत में भी प्रारम्भ में यह मॉडल अपनाया गया था परन्तु हमारी संस्कृति पर क्रिश्चियन संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए इस मॉडल पर रोक लगा दी गई।

(घ) इस्लामिक मॉडल– यह मॉडल मुस्लिम रूढ़िवादी मॉडलों पर आधारित है। इसका प्रमुख आधार मुस्लिम धार्मिक ग्रन्थ कुरान है। इसमें इस्लाम धर्म के प्रचार को प्रमुखता दी गई है। इस मॉडल में पुरुषों को बहुत ऊँचा दर्जा दिया गया है। इस मॉडल के दो भाग हैं। एक भाग में शुद्ध इस्लामिक मॉडल हैं। मोहम्मद साहब के बनाए कानूनों के अनुसार यह अत्यन्त मानवीय एवं स्नेही है परन्तु इसका दूसरा भाग धर्म के ठेकेदारों एवं मौलवियों द्वारा निर्धारित किया गया है। यह भाग अत्यन्त कठोर एवं निर्दयी है। ये मॉडल मुस्लिम युवा-वर्ग को दिग्भ्रमित करते हैं इसीलिए मुस्लिम देशों में अधिकतर जातीय दंगे होते रहते हैं। औरतों पर बहुत-सी पाबन्दियाँ लगाई गई हैं। यह मॉडल बहुत ही संकीर्ण विचार लिए हैं और अधिकतर मुस्लिम देशों ने ही इसे अपनाया है।

(ङ) कट्टरवादी मॉडल– जब बिना किसी कारण के धर्म एवं जाति के नाम पर अनेक पाबन्दियाँ लगाकर सम्प्रेषण को एक तरफा कर दिया जाता है तब आम जनता को घुटन महसूस होने लगती है। वह इसमें से बाहर निकलना

प्रारूप शैनन एवं वीवर के मॉडल का ही अनुकरण मात्र था परन्तु इसमें उनका सोचना कुछ भिन्न था। इनके अनुसार शोर जैसी कोई बात संदेश में होती ही नहीं तथा संदेश कभी अशुद्ध नहीं होता। दूसरे मॉडल में इन्होंने कहा कि सम्प्रेषण का माध्यम प्रेषक द्वारा चुना जाना चाहिए तथा इसी माध्यम के द्वारा संदेश को इस प्रकार प्रेषित किया जाना चाहिए कि वह प्राप्तकर्ता की समझ में आ जाए। तीसरे मॉडल में उन्होंने प्राप्तकर्ता द्वारा दी जाने वाली प्रतिक्रिया को भी महत्त्वपूर्ण माना। इस प्रकार इन्होंने प्राप्तकर्ता तथा उसके द्वारा दिया गया फीडबैक दोनों को महत्त्व दिया। इनके मॉडल के निम्नलिखित प्रमुख अंग है– 1. प्रेषक 2. सांकेतिक प्रक्रिया 3. असांकेतिक प्रक्रिया 4. संदेश का लक्ष्य 5. प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया।

(च) बरलो का मॉडल– इस मॉडल में बोध क्षमता को बहुत महत्त्व दिया गया है। बोधक्षमता से तात्पर्य आँख, नाक, कान आदि इन्द्रियों द्वारा ग्रहण प्रत्यक्ष ज्ञान से है। इनके अनुसार प्रेषक पहले तो संदेश को अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर सांकेतिक भाषा में परिवर्तित करता है तत्पश्चात् किसी माध्यम के द्वारा संदेश प्राप्तकर्ता को भेज देता है। संदेश प्राप्तकर्ता संदेश को किस प्रकार तथा किस रूप में प्राप्त करता है यह उसके विवेक तथा ज्ञान पर निर्भर करता है। इस मॉडल में एक कमी भी है। यह मॉडल बहुत संकुचित है क्योंकि इसमें सम्प्रेषण-प्रक्रिया की कई महत्त्वपूर्ण अवस्थाओं जैसे- माध्यम, साधन, प्रतिपुष्टि आदि की अवहेलना की गई है।

(छ) थिल एवं बोवी मॉडल– जॉन थिल एवं कोर्टलैण्ड एल. बोवी का मानना है- व्यावसायिक सम्प्रेषण घटनाओं की एक कड़ी है जिसकी पाँच अवस्थाएँ हैं जो प्रेषक एवं प्राप्तकर्ता को आपस में जोड़ती हैं। प्रेषक के पास एक विचार होता है जिसे वह संदेश के रूप में परिवर्तित करके उचित माध्यम के द्वारा प्रेषित करता है। तत्पश्चात् इस संदेश को प्राप्तकर्ता समझ कर अपनी प्रतिक्रिया के रूप में व्यक्त करता है। इस प्रकार सम्प्रेषण-प्रकिया अपना पूर्ण रूप धारण करती है।

(ज) कॉटज-लाजारफेल्ड का मॉडल– यह मॉडल मुख्य रूप से समूह के साथ सम्प्रेषण के लिए प्रतिपादित किया गया है। इस मॉडल के अनुसार प्रेषक द्वारा संदेश को सांकेतिक भाषा में परिवर्तित करके किसी भी उचित सम्प्रेषण माध्यम के द्वारा समूह के नेता एक पहुँचाया जाता है। इस प्रकार इस मॉडल में संदेश, प्रेषक तथा समूह का नेता तीन अंग माने गए हैं।

14/04/2020 (15)

2. सन्देश तथा 3. प्राप्तकर्ता- तीन प्रमुख अंग हैं परन्तु इन तीनों में भी प्रेषक सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। इस सम्प्रेषण-मॉडल में माध्यम का उल्लेख नहीं है क्योंकि उस समय सम्प्रेषण मौखिक था। यह सम्प्रेषण मॉडल एक तरफा है।

(ख) **मर्फी मॉडल–** इस मॉडल का प्रतिपादन सन् 1947 में एच. ए. मर्फी, एच. डब्ल्यू. हिल्डब्रेन्ड एवं जे. पी. थॉमस ने संयुक्त रूप से किया। इस मॉडल में मुख्यत: प्रेषक संदेश का चयन करके उसे सम्प्रेषित करता है। वह संदेश के सम्प्रेषण के लिए उचित माध्यम का चुनाव करता है। प्रापक संदेश प्राप्त करके उस पर अपनी प्रतिक्रिया करता है।

(ग) **लासवेल का मॉडल–** इस मॉडल का प्रतिपादन हैराल्ड डी. लासवेल ने सन् 1948 में किया था। सम्प्रेषण प्रक्रिया के विश्लेषण के लिए लासवेल ने 5 प्रमुख तत्वों पर बल दिया। इनके सम्प्रेषण मॉडल में 1. कौन (प्रेषक) 2. क्या (संदेश) 3. किस माध्यम से (सम्प्रेषण माध्यम) 4. किसके लिए (श्रोता) 5. क्या प्रभाव (प्रभाव) सम्मिलित हैं। लासवेल के सम्प्रेषण मॉडल में सभी आवश्यक तत्वों का उल्लेख है परन्तु फीडबैक का उल्लेख नहीं है। वास्तव में फीडबैक को लासवेल ने प्रभाव के अन्तर्गत सम्मिलित किया है। लासवेल का यह मानना है कि प्रेषक उचित माध्यम का प्रयोग करके प्राप्तकर्ता की विचार प्रणाली में परिवर्तन ला सकता है। इस प्रकार अरस्तू ने जहाँ प्रेषक को सर्वाधिक महत्त्व दिया था वहीं लासवेल के लिए सम्प्रेषण का माध्यम अधिक महत्त्वपूर्ण है।

(घ) **शैनन एवं वीवर का मॉडल–** सी. ई. शैनन एवं डब्ल्यू वीवर ने मशीनी सम्प्रेषण का एक मॉडल सन् 1949 में विकसित किया। इस मॉडल का सम्बन्ध रेडियो एवं टेलीफोन सम्प्रेषण से जुड़ा था। इस तकनीकी मॉडल में इन्होंने सम्प्रेषण प्रक्रिया का 1. तकनीकी 2. अर्थ एवं प्रसारण 3. श्रोता के स्तरों पर विश्लेषण किया। इनका यह भी मानना था कि संदेश प्राप्त करके पहले उसे सांकेतिक भाषा में परिवर्तित किया जाना चाहिए जिससे प्राप्तकर्ता को संदेश समझ में आ जाए। संदेश को सांकेतिक भाषा में परिवर्तित करने के पीछे इनका उद्देश्य यह था कि बाह्य शोर आदि जो बातें संदेश को अशुद्ध कर देती हैं उनको समाप्त कर दिया जाए और संदेश शुद्ध रूप में प्रेषित किया जा सके।

(ङ) **शैरम का मॉडल–** 'बलबर शैरम का मॉडल 1954 में अस्तित्व में आया। इन्होंने शैनन और वीवर के मॉडल पर ही अपने सम्प्रेषण सिद्धान्त का विकास किया। इन्होंने अपने सिद्धान्त के तीन मॉडल पेश किए। प्रथम

14/04/2020 (16)

(झ) सम्प्रेषण का आधुनिक मॉडल– आधुनिक मॉडल सम्प्रेषण प्रक्रिया को एक चक्र में प्रस्तुत करता है। इस चक्र के अनुसार संदेश को प्राप्तकर्ता के पास भेज दिया जाता है। प्राप्तकर्ता संदेश को प्राप्त करने के पश्चात् अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है जो उसकी प्रतिपुष्टि को दिखाती है। इस प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण हैं–

(i) **आगम–** वे सभी विचार एवं सूचनाएँ जिन्हें प्रेषक प्रेषित करना चाहता है।

(ii) **माध्यम–** प्रेषक सूचनाओं को भेजने हेतु जिस माध्यम (टेलीफोन, फैक्स, ई-मेल, पत्र, रिपोर्ट आदि) का सहारा लेता है।

(iii) **संदेश–** वे सूचनाएं जिन्हें भेजा जा रहा है।

(iv) **संदेश की प्राप्ति–** जो संदेश वास्तव में प्राप्त हो रहा है।

(v) **प्रतिपुष्टि–** संदेश प्राप्ति के बाद प्राप्तकर्ता के द्वारा दी गई प्रतिक्रिया- जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है।

(vi) **संदेश हानि–** जो संदेश भेजा गया, ठीक उसी रूप में उसे स्वीकार नहीं किया गया, उसमें कुछ अन्तर आ गया, ये अन्तर ही संदेश हानि कहलाती है सम्प्रेषण प्रक्रिया में जो बाधाएँ हैं उनके कारण ही ये संदेश हानि होती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सम्प्रेषण के अनन्त रूप एवं व्यवहार है इस कारण सम्प्रेषण के अनन्त प्रारूप एवं सिद्धान्त भी हमें प्राप्त होते हैं। यह विषय 'हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता' जैसा ही है। हमने कुछ प्रमुख मॉडलों का वर्णन ही यहाँ पर किया है।

(घ) सम्प्रेषण की चुनौतियाँ

मनुष्य की यह सहज, नैसर्गिक, अदम्य वृत्ति है कि वह अपने भावों, विचारों, अनुभवों और प्रतिक्रियाओं को दूसरों के साथ बाँटना चाहता है अर्थात् सम्प्रेषण मनुष्य के अस्तित्व का अभिन्न अंग है। सम्प्रेषण की आवश्यकता, अन्य मनुष्येतर प्राणियों को भी होती है किंतु मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसका विभिन्न संकेतों एवं प्रतीकों के अतिरिक्त सम्प्रेषण के लिए शब्दों के प्रयोग पर अधिकार है। शब्दों के माध्यम से सम्प्रेषण मनुष्य की नैसर्गिक वृत्ति भी है और क्षमता भी। मनुष्य जितना अपने प्रति सजग एवं